विधि के समान है विमानीकृत राजहंस,
विविध विवुध युत मेरु सो अचल है।
दीपति दिपति अति सातों दीपि दीपियतु,
दूसरो दिलीप सो सुदक्षिना का बल है।
सागर उजागर का बहु बाहिनी को पति,
छनदान प्रिय किधौं सूरज अमल है।
सबि विधि समरथ राजै राजा दशरथ,
भागीरथ पथगामी गंगा कैसो जल है।।10।।

शब्दार्थ—विधि = ब्रह्मा। विमानीकृत = सवारी किये हैं, वशीभूत किए हुए हैं। राजहंस = (1) हंस पक्षी (2) राजाओं के मन। विवुध = (1) देवता। (2) पंडितगण। दीपति = दीप्ति, यश। दिपति = दीप्त हो रही है, फैल रही है। दीपि = द्वीप। दीपियतु = प्रकाशित हो जाते हैं। दिलीप = रघुकुल के एक राजा का नाम। सुदक्षिणा = (1) सुदक्षिणा, राजा दिलीप की रानी का नाम (2) सुन्दर दक्षिणा, दान की शक्ति। उजागर = प्रसिद्ध। बाहिनी = (1) नदी (2) सेना। छनदान प्रिय = (1) आनन्द देता है प्रिय जिसको (2) प्रतिक्षण दान देता है प्रिय जिसको। भगीरथ-पथगामी = राजा भगीरथ की नीति पर चलने वाला। राजा भगीरथ राजा सागर के पौत्र थे। ये घोर तपस्या करके

गंगाजी को स्वर्ग-लोक से भूतल पर लाये, जिससे इनके पूर्वजों का ही उद्धार नहीं हुआ, वरन् अनेक अन्य पतितों का भी उद्धार हो गया, अतः 'भगीरथ-पथगामी' का भाव हुआ—राजा भगीरथ के समान लोककल्याण-की भावना से भरे हुए।

प्रसंग—इस छन्द में वैतालिक ने महाराज दशरथ की प्रशंसा की है।

व्याख्या—राजा दशरथ ब्रह्मा के समान हैं, क्योंकि जिस प्रकार ब्रह्मा राजहँस पर सवारी करते हैं, उसी प्रकार राजा दशरथ ने भी अन्य राजाओं के मन को वश में कर लिया है, अर्थात् अनेक राजा इनके आधीन हैं। राजा दशरथ सुमेरू पर्वत के समान हैं, क्योंकि जिस प्रकार सुमेरू पर्वत पर अनेक देवता रहते हैं, उसी प्रकार राजा दशरथ की सभा भी अनेक पण्डितों से युक्त है। राजा दशरथ का यश इतना अधिक फैला हुआ है कि इससे सातों द्वीप प्रकाशित हो रहे हैं। राजा दशरथ महाराज दिलीप का दूसरा रूप है, क्योंकि जिस प्रकार महाराज दिलीप को अपनी महारानी सुदक्षिणा का सहारा था, इसी प्रकार राजा दशरथ को अपनी दान की शक्ति का सहारा है, अर्थात् महाराज दशरथ अत्यधिक दानी है; जो भी इनके द्वार पर आ जाता है, यह खाली हाथ कभी नहीं लौटता। महाराज दशरथ जगत् में प्रसिद्ध और सागर के समान हैं, क्योंकि जिस प्रकार सागर अनेक नदियों का स्वामी होता है, उसी प्रकार महाराज दशरथ भी अनेक सेनाओं के अधिपति हैं। अथवा राजा दशरथ निर्मल सूर्य के समान हैं, क्योंकि जिस प्रकार समस्त संसार को आनन्द प्रदान करना सूर्य को प्रिय है; अर्थात् ये हर समय दान देते रहते हैं। राजा दशरथ सब प्रकार से समर्थ और अब प्रकार की शक्तियों से सुशोभित हैं। ये राजा भगीरथ की नीति पर चलने वाले हैं, अर्थात् राजा भगीरथ के समान ही लोक-कल्याण की भावनाओं से युक्त हैं और इनका हृदय गंगाजल के समान निर्मल तथा पतितोद्धारक है।

विशेष—यह छन्द बहुत ही भावपूर्ण है। वैतालिक अपनी प्रकार प्रतिभा से परोक्ष रूप में महर्षि विश्वामित्र को आश्वासन देता है कि वे जो भी माँगने के लिए आये हैं, वह उन्हें अवश्य मिलेगा, क्योंकि राजा दशरथ अत्यन्त दानी तो हैं ही, सब प्रकार से शक्ति-सम्पन्न और समर्थ भी हैं।

अलंकार—उल्लेख, रूपक, उपमा, श्लेष, अनुप्रास।